

सत्य साहित्य

वर्ष 7 / अंक 2
जनवरी 2024
Year 7 / No. 2
January
2024

सत्य साहित्य, श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका

जो हम भले बुरे तो तेरे ।
 तुम्हें इसी लाज बड़ाई,
 बिनती सुनु प्रभु से ॥१॥
 सब तजि तव सरनागत आयो,
 निज-कर चरन गढ़ेरे ।
 तव प्रताप-बल बहतन काहू,
 निद्रा भये घर चैरे ॥२॥
 और देव सब रंक भिरवारी,
 त्यागे बहुत अनेरे ।
 सरदास प्रभु तुम्हारे कपातें,
 पाये सुख जु घनेरे ॥३॥

(परम पूजनीय स्वामी जी महाराज की डायरी से)

इस अंक में पढ़िए

- भजन
- बधाई
- Karma
- श्रीरामशरणम् : एक ऐतिहासिक विवरण
- आप बीती
- बच्चों के लिए
- विभिन्न केन्द्रों से
- कैलेन्डर

सत्य साहित्य
मूल्य (Price) ₹5

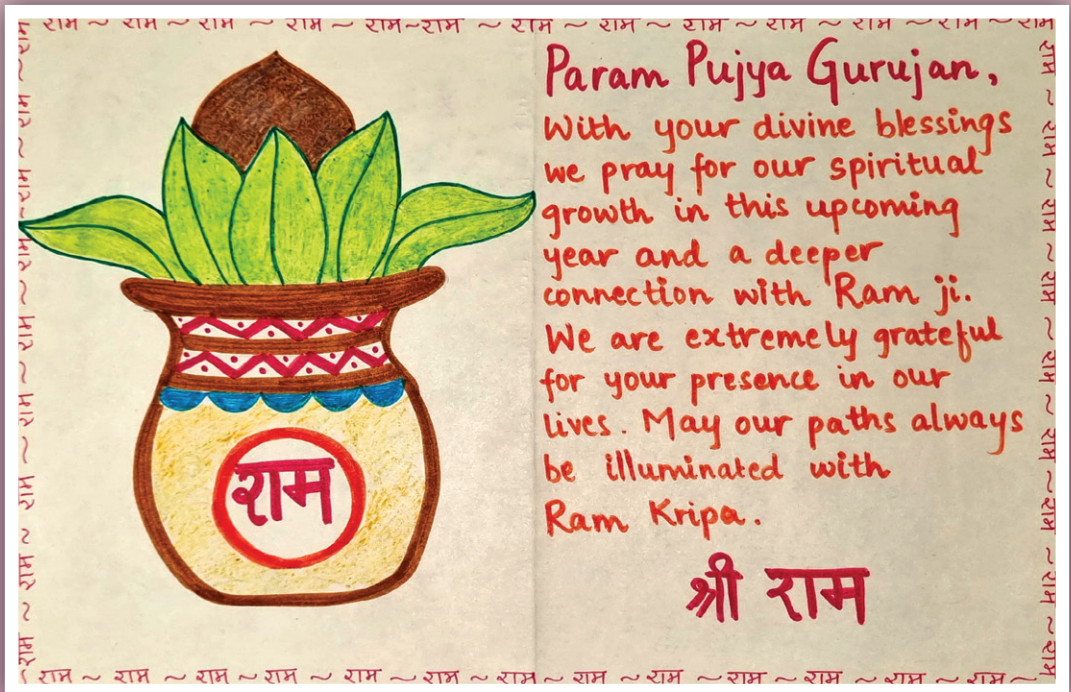
नए वर्ष की बधाई



All love & Jai Jai Ram
 मधुसूक्तम् आनन्दसूक्तम् एवं विंगलसूक्तम्
 नव वर्ष के लिए शुभ कामनाएं।
 Dr. Jai.

All love and Jai Jai Ram

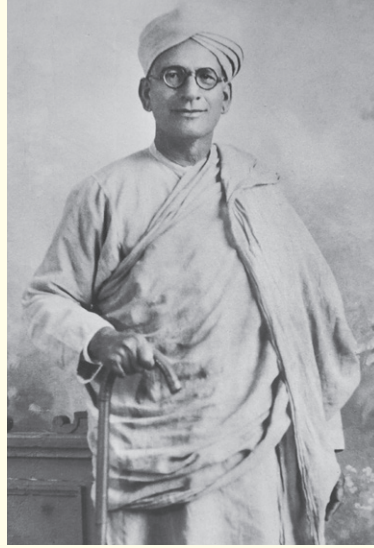
Best wishes for a sweet, blissful and auspicious New Year.



Doctrine of *Karma* (Action)

सत्यानन्द

In Haridwar two learned pandits were having a discussion on the doctrine of *Karma* (doctrine that liberation is achieved through the path of action or selfless performance of duty). A big crowd of spectators had also gathered there. But the debate was not coming to any conclusion. Finally a wise farmer stepped forward and said - These pandits are only engaged in quibbling and just wasting everybody's time.



If you ignore their grandiloquent words, fallacious arguments and flowery speech and think then *karma* (action) is only that which is done. The *karta* (doer of action) is the embodied soul. In accordance with past actions the impetus for good and bad actions arises in the *karta*. This impetus for action is *cheshta* (effort) or *pravritti* (tendency). The moving force behind tendency are *raaga* (likes) and *dvesha* (dislikes). Indeed the *vasana* (accumulated impressions, tastes and inclinations brought over from the previous births) of past actions influence tendencies for new ones. Just like one insect walks behind another one, a long line of camels follow the first and thousands of honey bees fly behind the queen bee so also repeated impressions of an action get transmuted into tendencies. Just like the flow of water can be controlled and turned in a different direction so also all tendencies can be controlled and given a new turn. The discriminating doer has full control over his

tendencies. So much so that he can even destroy them. Just like if seeds are roasted then they do not germinate so also if *sanchit karma* (accumulation of one's past karmas – all actions, good and bad, from one's past lives) and the impressions of actions currently getting accumulated are scorched by devotion, knowledge and right action then their inherent tendencies are also burnt to ashes. Now

as regards *prarabdha karma* (the part of our *sanchit karma* that bears fruit in the present life whose consequences have to be experienced), it is automatically exhausted after its consequences have been experienced. Once *sanchit karma* and *kriyamana karma* (the karma that is currently being created and will yield results in the future) are destroyed, *prarabdha karma* like a tree whose roots have been severed also dries up on its own. Even if one's bad *prarabdha karma* is very strong then also one can make it mild by means of devotion, God-remembrance, penance, discrimination and right knowledge. To a coward even a thorn prick is very painful but a heroic patriot welcomes even a barrage of bullets like a garland of flowers and continues fighting with the enemy. A person trapped in ignorance is overwhelmed with even a little suffering but a devotee of God remains unshaken even in a landslide. An ignorant person becomes extremely distraught with

the loss of a loved one but the wise man considers it nothing but a transitional phase. The magnitude of suffering can also be lessened by the practice of forbearance. A person used to comforts melts into sweat under the midday sun of the hot summer season. But on a June afternoon, a farmer

standing in the farmyard goes about his work happily singing. So it is indeed the truth that by dint of mental strength and forbearance pain and suffering can be mitigated, they do not appear so overwhelming anymore.

(*Bhakti Prakash, Katha Prakash p. 514 Old edition, 498 New edition*) ■

पूर्णकाम परमेश्वर

प्रेम

जब जाप में, श्री रामशरणम् में बैठें तो मन में अनेक इच्छाएँ लेकर नहीं बैठना चाहिए। परमेश्वर तो पूर्णकाम हैं। ये इच्छाएँ तो पूर्ण हो जाएँगी परन्तु वह भक्त परमेश्वर से दूर हो जाता है और उसके मन को शान्ति प्राप्त नहीं होती। मन को शांति तो निष्काम भाव से नाम आराधन और निस्वार्थ सेवा और परोपकार से ही प्राप्त होती है। प्रभु पर पूर्ण विश्वास और भरोसा होना चाहिए। वैसे तो भक्त के मन में कोई इच्छा नहीं होनी चाहिए। यदि कोई पैदा हो भी जाती है तो प्रभु पूर्ण कर देते हैं। माँ बच्चे की पुकार से विह्वल हो जाती है और उसकी पुकार सुनने और मनोकामना पूर्ण करने के लिए विवश हो जाती है। सच्चे भक्त को तो केवल प्रभु कृपा ही माँगनी चाहिए। वह जहाँ बैठा दे, ठीक है। उसी में संतुष्ट रहना चाहिए। प्रभु का भाना मानना चाहिए। उसको पता है हमारे लिए क्या हितकर है। जब तक मनोकामना पूर्ण नहीं होती तब तक लालसा बनी रहती है। पर फिर मन अशान्त रहने लगता है, मेरे पास धन हो, लोग मेरी प्रशंसा करें, मेरा आदर करें, सलाम करें पर इसमें कुछ नहीं, इससे मन शान्त नहीं होता। जिन पर राम— कृपा है उन्हें अपना जीवन ऐसा बनाना चाहिए, जिससे दूसरे स्वतः आकृष्ट हों। जब फूल में सुगन्धी पैदा होती है तो हवा में स्वतः आ जाती है। जो स्वयं शान्त नहीं वे दूसरों को राम नाम से लाभ क्या बता सकेंगे? आप को जाप करना चाहिए, दूसरों को प्रेरणा दें।

(परम पूजनीय श्री महाराज जी की डॉयरी से श्री प्रेम जी महाराज का प्रवचन, हाँसी, 8.5.1971) ■



कर्म और प्रारब्ध

१२०१/२०२१

कर्म-नाश तीन प्रकार से - ① प्रायश्चित्त द्वारा
② भोगने से ③ राम-कृपाजनित ज्ञान या भक्ति द्वारा ।

The bonds of karma can be destroyed in three ways - (1) by doing penance, (2) by experiencing the consequences, (3) by knowledge or devotion aroused by Ram's grace.

साधकजनो, जब जीवन में कोई प्रतिकूल घटना घटित हो जाती है जैसे रोग आ गया, कभी अपेक्षित स्थान पर नौकरी नहीं मिली या किसी कारणवश नौकरी से निकाल दिए गए हों या फिर अचानक मुकदमा आ गया हो तो संसार से उलाहना सुनने को मिलता है। ऐसी विषम परिस्थितियाँ, ऐसी प्रतिकूलताएँ किसी भक्त के जीवन में (मैं आप सबको भक्त कहता हूँ। भगवान से जो प्रेम करे वह भक्त) आ



सरोकार नहीं है। यदि आप भी अनेक जिहवा मुख में रख कर अनेक बातें करते हो जैसे संसार करता है तो फिर आप में और उन संसारियों में कोई अंतर तो नहीं हुआ। कभी किसी को इस प्रकार का उलाहना नहीं देना। यदि उलाहना सुनने को मिला है तो अपने विश्वास एवं श्रद्धा को डगमगाने न देना। साधक पक्का रहे, भक्त पक्का रहे। चुप रह सके तो चुप रहे यदि जवाब देने की आवश्यकता हो तो, कहे

जाएँ तो पराए से भी उलाहने सुनने को मिलते हैं और अपनों से भी, "और जाओ श्रीरामशरणम्, और करो अमृतवाणी का पाठ, और लम्बी लम्बी माला फेरो, और जाओ साधना सत्संगों पर! साधक का इस समय क्या कर्तव्य है? एक भक्त का इस समय क्या कर्तव्य है? वह इन बातों से प्रभावित न हो, उसके विश्वास पर उसकी श्रद्धा पर कोई अघात न पहुँचे। उसका विश्वास डगमगाए न, उसकी श्रद्धा डाँवाँडोल न हो। संसार के प्राणियों के मुख में एक जिहवा नहीं है, मेहरबानी कर के आप अपने मुख में एक ही जिहवा रखना बाकी संसार से हमारा कोई

कि देवी (या सज्जन) यदि भजन पाठ न करता होता तो न जाने ये प्रतिकूलता और कितनी अधिक होती। यह परमेश्वर का लाख-लाख शुक्र है, भजन पाठ का प्रताप है, अमृतवाणी का प्रताप है, राम नाम का प्रताप है कि इतने से घटित होने से बात बंद हो गई, खत्म हो गई।

अकस्मात् दुर्घटना घटित हो जाती है। दुर्घटना ही घटी है, कभी टॉंग पर चोट आ गई है कभी बाजू पर चोट आ गई है स्पष्ट है कि ग्रह चक्रों के अनुसार ऐसा हुआ। कोई ग्रह चक्र इस प्रकार का था कि वह ग्रह चक्र आपको मार भी सकता था लेकिन ऐसा

नहीं हुआ तो भक्त की धारणा इस प्रकार की होनी चाहिए कि मेरे राम ने मुझे और जीने का अवसर दिया है ताकि मैं और अधिक परमात्मा की भक्ति कर सकूँ। मैं और अधिक उपासना कर सकूँ, अपने राम को और रिझा सकूँ एवं उस लक्ष्य की प्राप्ति कर सकूँ।

एक भक्त त्रिलोचन हुए हैं। उनके छोटे पुत्र की मृत्यु हो गई है और पत्नी उलाहने देने वाली है। वह कहती है, "और करो संतों महात्माओं की सेवा और जाओ मन्दिरों में, बजाओ वहाँ पर ढोल मंजीरे, जगह-जगह करो सत्संग। जिसकी पूजा करते हो, जिसकी आराधना करते हो, वह तुम्हारे लिए इतना भी नहीं कर सका।" अपनी पत्नी ही उलाहने दे रही है। अर्ज करी न, ऐसे समय में अपनों के भी उलाहने सुनने को मिलते हैं और बेगाने तो बेगाने ही हैं। भक्त त्रिलोचन तो भक्त ठहरे जैसा हम सबको होना चाहिए। भक्त कहता है, "भाग्यवान! क्यूँ परमात्मा को कोस रही है, कोसना है तो अपने कर्मों को कोस। ये हमारे कर्मों का फल है जिसका भुगतान हम भुगत रहे हैं।" परमात्मा का भजन पाठ करके, सत्संग करके, अमृतवाणी का पाठ करके, राम-राम जप के तो हम परमात्मा पर कोई एहसान नहीं करते। भक्त त्रिलोचन अपनी पत्नी को समझा रहे हैं कि ये जो पूजा पाठ हम करते हैं, आप सोचो कि क्या इससे परमात्मा को कोई फायदा है? ये हमारी भूल है, ये हमारी भ्रांति है, हमारी ये सोच ठीक नहीं है। इससे परमात्मा को कोई फर्क नहीं पड़ता। आप परमात्मा की पूजा करो न करो, भजन करो न करो, उससे उसको कोई फर्क नहीं पड़ता। बात तो आपकी अपनी भलाई की है, आपके अपने कल्याण की है इसीलिए आप भजन पाठ करते हो। परमात्मा भी इसी लिये चाहता है कि आप भजन-पाठ करो ताकि आपका मंगल हो सके, आपका कल्याण हो सके, आपका उद्धार हो सके, ये परमात्मा की कृपा है। इसमें परमात्मा का कोई स्वार्थ नहीं है इसमें

परमात्मा को कोई कमीशन नहीं मिलनी।

स्वामी जी महाराज ने हमें नाम दीक्षा दी है और अधिक नाम जपने के लिये कहते हैं, इसलिए नहीं कि उन्हें कोई कमीशन मिलेगी। उसका कोई हिस्सा स्वामी जी महाराज को मिलेगा, नहीं। स्वामी जी महाराज इसलिए कहते हैं क्योंकि कल्याण इसी में है। अरे! अधिक राम नाम जपोगे, जितना अधिक राम नाम जपोगे उतनी समस्याएँ भूलेंगी, उतनी कामनाएँ खत्म होंगी। यदि भजन पाठ करते हुए भी हमारी कामनाएँ इसी प्रकार की बनी हुई हैं जैसे एक सामान्य व्यक्ति की माँगें खत्म ही नहीं होतीं जिंदगी भर, जन्म जन्मान्तर हमारी माँगें खत्म नहीं होतीं, माँग एक खत्म भी हो जाती है तो उसके साथ और माँगों की वृद्धि हो जाती है और कामनाएँ उदित हो जाती हैं। भजन पाठ से देवी, त्रिलोचन समझा रहे हैं, भजन पाठ करने से हमारा मन साफ होगा। मन शुद्ध होगा, पुराने किए हुए कर्म नष्ट नहीं होंगे उनके संस्कार नष्ट नहीं होंगे। देखो भक्त की कितनी सुन्दर, स्पष्ट धारणा है।

ये जो भजन पाठ हम कर रहे हैं, पुराने कर्मों के, कुकर्मों के संस्कार नष्ट नहीं होंगे – संस्कार क्षीण होंगे, हल्के पड़ेंगे, मंद हो जाएंगे, मन का पवित्रीकरण होगा, दुःख सहने का बल मिलेगा, देखो कितनी बड़ी बात कही है। अपने कर्मफल जो हमें भोगने हैं, वे दुःख या सुख दोनों ही रूप में आते हैं। दुःख सहने के लिए बल चाहिए और सुख को पचाने के लिए भी बल चाहिए। यह बल कहाँ से मिलेगा? यह बल परमात्मा के भजन पाठ से मिलेगा। यह परमात्मा के आराधन और भक्ति से मिलता है।

भक्त त्रिलोचन समझा रहे हैं, "हे भाग्यवान! भजन पाठ करने से, परमात्मा के नाम का स्मरण करने से, पापी से पापी, कामी, क्रोधी, लोभी, अभिमानी भी तर जाते हैं।" ये तरना, ये मृत्यु से पहले की घटना नहीं है बल्कि ये मृत्यु के बाद की घटना है।" त्रिलोचन

समझा रहे हैं कि राम नाम के आराधन से, नाम जाप से पश्चाताप कर के, प्रायश्चित्त कर के, व्यक्ति यदि कामी, क्रोधी भी है, अभिमानी भी है, लोभी भी है, मोहग्रस्त रहने वाला भी है, मोह ममता के जाल में फँसा हुआ भी है तो भी तर जाएगा। ये शब्द ध्यान से सुनने योग्य हैं देवियो सज्जनो, त्रिलोचन कहते हैं कि पापी से पापी, अधम से अधम, पतित से पतित भी तर जाएगा लेकिन कृतघ्न कभी नहीं तरेगा। यदि हमारा विश्वास डावाँडोल होता है, यदि हम ही उलाहने देने वाले हो जाते हैं तो इसी को कृतघ्न कहा जाता है। अरे! परमात्मा ने क्या नहीं दिया हमें? भक्त त्रिलोचन अपनी पत्नी से पूछ रहे हैं, “परमात्मा ने क्या नहीं दिया हमें? अपनी एक वस्तु देकर, यदि उसने वापिस ले ली है तो उसमें उलाहना क्यों दे रही हो?” पुनः भक्त त्रिलोचन समझाते हैं, “इतना कुछ दिया हुआ है। ये जो हम भजन पाठ करते हैं, ये जो हम नाम का आराधन करते हैं, अमृतवाणी का पाठ करते हैं, ये परमात्मा के ऊपर कोई एहसान नहीं कर रहे, ये उसका धन्यवाद करने का ढंग है।” ये भक्त त्रिलोचन समझाते हैं। जितना अधिक राम नाम जपोगे साधकजनो उतना अधिक परमात्मा के पास आपजी का धन्यवाद पहुँचेगा, आपकी कृतज्ञता पहुँचेगी, भगवान प्रसन्न होंगे। शाबाश! ये कृतघ्न नहीं है ये कृतज्ञ है, ये grateful है और gratefulness परमात्मा को बहुत भाती है बहुत अच्छी लगती है।

उस दिन एक ऐसे भक्त की चर्चा चल रही थी जो वृद्ध हो गए हैं। आप जी से अर्ज करी थी कि वृद्धावस्था अपने आप में रोग है। वृद्धावस्था में रोग आ जाता है तो इतनी आसानी से ठीक नहीं होता। क्योंकि रोग के ऊपर एक और रोग आ गया है। अभी पहला रोग तो ठीक नहीं हुआ। वृद्धावस्था का रोग कौन ठीक कर सकता है? उसके ऊपर कोई और रोग आ जाता है तो वह इतनी आसानी से ठीक नहीं होता। एक भक्त वृद्ध भी हो गए हैं और उनके

ऊपर रोग भी आ गया है। रात को एक बार, दो बार, तीन बार उठने की जरूरत पड़ती है। ऊपरी मंजिल पर गुरु महाराज रहते हैं, नीचे शिष्य रहते हैं। जैसे ही खट-खट की आवाज होती है कोई न कोई शिष्य आ जाता है। किसी की ड्यूटी लगा रखी होगी, एक शिष्य आ जाता है सेवा करता है और सेवा कर के गुरु महाराज को पुनः लिटा कर तो वह लौट जाता है। ये रात में दो-तीन बार करना पड़ता है। आज एक नया युवक आया है, ये शिष्य नहीं है, उसने भी आकर ऐसा ही किया जैसे पहले शिष्य करते हैं, बाथरूम इत्यादि के लिए ले गया है और सेवा ठीक ढंग से करी है। उसका स्पर्श भक्त को बहुत अच्छा लगा, बहुत कोमल स्पर्श है, बहुत मीठा स्पर्श है। उसका पकड़ने का ढंग इत्यादि अन्य शिष्यों के ढंग से अलग है, बड़ा प्यारा है, लिटा कर चले गए हैं। यह क्रम कुछ दिन इसी प्रकार चलता रहा। भक्त ने एक दिन पूछ ही लिया, “आप खट-खट की आवाज सुनते ही तत्काल आ जाते हो, क्या कहीं पास में रहते हो? कहाँ रहते हो?” युवक ने कहा, “पास ही रहता हूँ, सब जगह रहता हूँ।” ये बात भगवान के मुख से निकल गई, उस युवक के मुख से निकल गई ये बात, “सब जगह रहता हूँ।” “सोते नहीं?” “नहीं झपकी लेता हूँ,” भगवान ने कहा, “मैं सोता नहीं झपकी लेता हूँ, मेरा उसी से काम चल जाता है।” शक हुआ भक्त को। भक्त ने कस के बाँह पकड़ी, कहा, “सच-सच बताओ आप कौन हो?” भगवान श्री जिस काम के लिए आए हुए थे, वह काम उनका पूर्ण हो रहा है, भगवान अपने स्वरूप में प्रकट हुए। प्रकट हो कर कहते हैं, “भक्त मुझे तेरी सेवा कर के बहुत अच्छा लगता है, मैं अपने भक्तों का सेवक हूँ, मैं अपने भक्तों का दास हूँ।” भक्त बहुत ग्लानि का अनुभव कर रहा है, कहा, “महाराज! मुझ जैसे तुच्छ प्राणी की सेवा करने की क्या आवश्यकता है? इससे तो बेहतर होता कि आप मेरा रोग ही नष्ट कर देते।” भगवान जी जो

इसी काम के लिए आए हुए हैं समझाते हैं। क्योंकि भक्त के अपने मन में थोड़ी उधेड़बुन चल रही थी। उस उधेड़बुन को स्पष्ट करने के लिए ही भगवान ने ये सब कुछ किया।

भगवान समझाते हैं, भक्त! प्रारब्ध तीन प्रकार की हुआ करती है, एक तो मंद प्रारब्ध है। मंद प्रारब्ध वह होती है जो सत्कर्म करने से, सेवा से, दान पुण्य इत्यादि करने से नष्ट हो जाती है। भगवान श्री अपने मुख से समझा रहे हैं। आप देखते हो कई दफा अपनी प्रारब्ध जो है या हल्की पड़ जाती है या मिट जाती है। पता तो नहीं चलता लेकिन फिर भी किसी न किसी ढंग से बोध तो जरूर हो जाता है। प्रारब्ध में कुछ और लिखा हुआ था घटित कुछ और हो गया है। मानो वह प्रारब्ध कोई मंद प्रारब्ध थी, वह सेवा इत्यादि करने से, सत्कर्म इत्यादि करने से, दान पुण्य इत्यादि करने से वह नष्ट हो गई और मंद भी हो गई। मानो उसने पता ही नहीं लगने दिया कि प्रारब्ध में कुछ दुर्घटना घटित होनी थी।

दूसरे प्रकार की प्रारब्ध है तीव्र प्रारब्ध। भगवान श्री भक्त को समझा रहे हैं और भक्त के माध्यम से भगवान हम सबको ही समझा रहे हैं। तीव्र प्रारब्ध साधना से नष्ट होती है, संतों महात्माओं के आशीर्वाद से नष्ट होती है, परमात्मा की कृपा से नष्ट होती है। व्यक्ति साधना करता है तो संतों महात्माओं की कृपा का पात्र और परमात्मा की कृपा का पात्र बन जाता है। तो तीव्र प्रारब्ध साधना से मंद हो जाती है या नष्ट हो जाती है, विनष्ट हो जाती है।

भक्त, तीसरी प्रारब्ध है तीव्रतर प्रारब्ध। तीव्रतम प्रारब्ध, ये हरेक को भुगतनी ही पड़ती है। भगवान श्री समझा रहे हैं कि ये तीव्रतम प्रारब्ध हर एक को भुगतनी ही पड़ती है। अवतारों को भी ये प्रारब्ध भुगतनी पड़ती है। रामावतार के समय प्रभु राम ने बाली को मारा तो कृष्ण अवतार में उसी ने व्याध

बन के तो कृष्ण को मारा। भगवान श्री अपने मुख से इस बात को समझा रहे हैं, कि ये प्रारब्ध ऐसी प्रारब्ध है जिससे कोई बच नहीं सकता। भगवान श्री कहते हैं, "भक्त! मैं तेरी प्रारब्ध को दबा सकता था, मैं तेरे रोग को नष्ट कर सकता था, मिटा सकता था पर ऐसा करने से तेरी प्रारब्ध दब तो जाती लेकिन तेरी प्रारब्ध नष्ट न होती। इस प्रारब्ध को भुगतने के लिए तुम्हें फिर जन्म लेना पड़ता। अब मैं नहीं चाहता तेरे जैसा भक्त, कितने भक्ति भाव वाला भक्त, मेरा प्यारा भक्त पुनर्जन्म ले। कम से कम मेरी इच्छा नहीं, हाँ भक्त यदि तेरी इच्छा है पुनर्जन्म की तो तुझे पुनर्जन्म मिलेगा लेकिन मेरी इच्छा नहीं है कि तू पुनर्जन्म को प्राप्त करे। इसलिए तेरा ये कहना कि सेवा करने की अपेक्षा मेरा रोग ही क्यूँ न मिटा दिया आपने, मैंने इस बात का उत्तर दिया है। कहा, "भक्त! मुझे भक्तों की, अपनों की, अपने प्यारों की, सेवा करनी बहुत अच्छी लगती है।" भगवान फिर स्पष्ट करते हैं, "मुझे सेवा में किसी प्रकार की कोई तकलीफ नहीं होती। चूँकि प्रारब्ध उस भक्त को भुगतनी ही पड़ती है तो मैं उसकी पीड़ा अपने ऊपर ले लेता हूँ। उसकी पीड़ा उसे नहीं होने देता, उसकी सेवा मैं करता हूँ।" कई जगहों पर, उस रोग की या जो कुछ घटना भक्त के ऊपर घटित होती है उसकी जो पीड़ा होती है उसकी जो वेदना होती है वह भगवान अपने ऊपर झेलते हैं ऐसे प्रमाण हैं।

कभी उलाहना नहीं देना, कभी उलाहना नहीं सुनना। सुनने को मिले तो उसे पचा जाओ। आपकी प्रतिक्रिया उस उलाहने के प्रति नहीं होनी चाहिए। यदि प्रतिक्रिया आप करते हो तो आप कृतज्ञ नहीं हो आप कृतघ्न हो, ungrateful और भगवान श्री अनेक बार घोषणा करते हैं कि कृतघ्नता ही ऐसा पाप है जिसका प्रायश्चित्त नहीं है।

(परम पूजनीय श्री महाराज जी का 16.7.2007 का प्रवचन) ■

श्रीरामशरणम् - एक ऐतिहासिक विवरण : रोपड़

(श्रीरामशरणम् एक ऐतिहासिक विवरण के अन्तर्गत लेखों की अगली कड़ी)



रोपड़ में श्रीरामशरणम् की स्थापना से पहले श्री अमृतवाणी जी का पाठ, ज्ञानी जैल सिंह कालोनी, रोपड़ स्थित परम पूज्य श्री प्रेम जी महाराज जी द्वारा दीक्षित एक वरिष्ठ साधिका के निवास स्थान पर होता था। सत्संग वहाँ काफी सालों तक चला। धीरे-धीरे साधकों में वृद्धि होने के कारण घर में सत्संग की जगह छोटी पड़ने लगी, सभी साधकों ने श्रीरामशरणम् सत्संग भवन की स्थापना के लिए विचार विमर्श किया तथा ऐसे स्थान को खोजने का प्रयास हुआ जहाँ पर सभी साधक – साधिकाएँ सुगमतापूर्वक पहुँच सकें। परम पूज्य गुरुजनों की कृपा से शहर से बाहर बिल्कुल सड़क के पास ही शांत वातावरण में जगह मिल गयी।

15 दिसम्बर, 1998, तदनुसार पौष 12 वि. सं. 2055 मंगलवार को ब्रह्मलीन परम पूज्य डॉ विश्वामित्र महाराज जी के कर कमलों द्वारा भवन का शिलान्यास रखा गया। भवन

के निर्माण कार्य का संचालन परम पूज्य श्री महाराज जी के मार्गदर्शन में लगभग 5 वर्ष तक चलता रहा। इसमें एक बड़ा सत्संग हॉल उसके साथ ही श्री राम नाम जाप का कक्ष एवं उसके ऊपर ब्रह्मलीन परम पूज्य डॉ विश्वामित्र जी महाराज जी का कक्ष बनाया गया। हॉल के मुख्य द्वार पर 'श्रीरामशरणम् गच्छामि' एवं श्री अधिष्ठान जी के ऊपरी स्थान पर 'श्री रामशरणम् वयं प्रपन्ना' भी अंकित किया गया। सत्संग हॉल में श्री अधिष्ठान जी की स्थापना की गई व उनके दाईं ओर परम पूज्य श्री सत्यानंद स्वामी जी महाराज जी तथा बाईं ओर परम पूज्य श्री प्रेम जी महाराज जी के चित्रों की भी स्थापना की गई।

भवन निर्माण के बाद पुनः श्री महाराज जी से प्रार्थना की गई कि वे इस भवन की विधिवत् स्थापना के लिये कोई तिथि निर्धारित करें। परम पूज्य गुरुजनों के आशीर्वाद से

महाराज श्री ने 20 फरवरी, 2003 तदनुसार, फाल्गुन, वि. सं. 2059 (गुरुवार) का मांगलिक दिवस कार्य के लिए सुनिश्चित किया। वह स्वयं सायं एक दिन पहले पहुंच गए। अगले दिन सुबह को भवन में प्रवेश के लिए परम पूज्य श्री महाराज जी के पावन सान्निध्य में हवन-पूजन का आयोजन किया गया, जिसका समापन पूरे शास्त्रों एवं आध्यात्मिक विधि द्वारा हुआ। तत्पश्चात् पूज्य श्री महाराज जी ने कलश (जो कि एक साधिका द्वारा उठाया हुआ था) के साथ हाल में प्रवेश किया। श्री अमृतवाणी जी का पाठ प्रवचन के बाद महाराज श्री ने सभी उपस्थित साधकों को बधाई दी और भवन साधकों को समर्पित कर दिया। मान मर्यादाओं नियमों का पालन करने का निर्देश भी दिया। यह सारा कार्यक्रम लगभग 12 बजे तक चलता रहा। समापन पर प्रसाद

एवं प्रीतिभोज का भी आयोजन किया गया, जिस में सभी उपस्थित साधकों ने बड़े ही चाव से सेवा निभाई।

21 फरवरी 2003 से श्रीरामशरणम् भवन में रोजाना सत्संग और साप्ताहिक सत्संग निरन्तर निर्विघ्न चल रहा है। श्री राम नाम-जाप मंगलवार व पूर्णिमा को सत्संग से एक घंटा पहले होता है। विशिष्ट अवसरों पर भी श्री राम नाम के पावन जाप एवं पुष्पांजलि का आयोजन किया जाता है। समय-समय पर दीक्षा का आयोजन भी गुरु कृपा से होता है।

हम सभी अपने गुरुजनों के आभारी हैं, जिनके संरक्षण एवं मार्गदर्शन में हमें यह दिव्य स्थान प्राप्त हुआ है। हम सब यही प्रार्थना करते हैं कि भविष्य में भी हमें उनका आशीर्वाद व मार्गदर्शन प्राप्त होता रहे। ■

अनुभूति

गुरु का अदृश्य सहारा

मैं बैंगलौर में पढ़ रही थी। 22 अगस्त 2023 की दोपहर के समय मैं अपनी एक सहेली के साथ P.G. से college जा रही थी। रास्ते में अचानक मेरी नज़र बिजली के हिलते हुए खम्बे पर गई। मेरे कहने पर मेरी सहेली तो एक दुकान में घुस गई। वह खंबा जिसमें 1100 kV का करंट था वह मेरे ऊपर गिर गया। एक स्कूटर के बीच में आ जाने से, मुझे करंट लगने से बच गया, मानो राम जी ने अपना हाथ बीच में रख कर बचाया हो। उस खंबे की तारों के करंट से तो मैं बच गई लेकिन उनकी चिंगारियों से मेरी 40 per cent body जल गई थी जिसमें मेरा चेहरा,

गला, दोनों हाथ, आगे और पीछे का upper शरीर और front thighs पर burns आये। इस घटना के कारण 51 दिन मुझे hospital में रहना पड़ा। इस दौरान जो मुझे अनुभूतियाँ हुईं, उनमें से कुछ मैं आपके साथ बाँटना चाहती हूँ।

1. ICU में कुछ समय मैं पेट के बल लिटाई गई थी, मेरी आँखें बंद थीं और मैं unconscious थी। उस समय मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि किसी ने मेरी पीठ पर हाथ सहलाया हो। उस हाथ में बहुत reassurance वाली feeling थी, ऐसा लगा कि सब ठीक हो जाएगा। मुझे नहीं पता था कि उस कमरे में मुझे कितने दिन

हो चुके हैं। जब मैंने होश में आकर मम्मी—पापा से पूछा कि कोई था क्या कमरे में मेरे साथ, तब पापा ने कहा कि गुरु महाराज तेरे साथ पहले दिन से आकर बैठे हैं।

2. एक दिन मुझे बहुत असहनीय खुजली हुई और दर्द हो रहा था। मेरे घावों के कारण ऐसा अकसर हुआ करता था। ऐसा कुछ एक घंटे से चल रहा था। उस समय doctors ने मुझे दवा देने के लिए मना कर दिया था। मैं दर्द के मारे चीख रही थी। मेरे सामने श्री महाराज जी की तस्वीर लगी हुई थी। मैंने उनसे कहा “आप कहाँ चले गए हो, please जहाँ पर भी हो, मेरे पास आ जायो।” उसके बाद मम्मी—पापा ने कहा कि बस दस मिनट wait करो, मैंने वैसा ही किया और एकदम से मेरा सारा दर्द और खुजली गायब हो गई।

3. जब मैं private room में थी, मुझे याद है मैं बहुत ज्यादा दर्द में थी उस दिन कोई भी कुछ नहीं कर सकता था मेरी उस स्थिति का। लेकिन मुझे पता था कि श्री महाराज जी उस room में मेरे साथ थे। उस दिन मैं महाराज जी से बहुत चिल्ला कर लड़ी, जैसे किसी अपने से लड़ते हैं। मैंने उनसे पूछा “मेरे साथ क्यूँ ऐसा कर रहे हो? मेरे साथ ऐसा क्यूँ हो रहा है?” बहुत देर तक मैंने उनसे बातें की, फिर थोड़ी ही देर में सब सही हो गया, सारा दर्द गायब हो गया।

4. मुझे अक्सर dressing के समय बहुत ज्यादा दर्द हुआ करता था। ये बात मेरी second surgery से पहले की है जब मेरे सारे घाव खुले हुए थे। मैंने मम्मी से कहा कि

मुझे dressing करवाने से बहुत कष्ट होता है, मैं नहीं करवा पाऊँगी लेकिन मम्मी ने कहा कि dressing करवाना जरूरी है। फिर मैंने श्री महाराज जी से कहा “आप देखें कैसे होगी dressing. Please आप देखलो मुझे दर्द न हो।” उस दिन मुझे बिल्कुल कष्ट नहीं हुआ और न ही उस दिन के बाद कभी भी।

5. ये बात तब की है जब अस्पताल में चंद ही दिन बचे थे। उस दिन मेरी बहुत इच्छा थी कि अब बस मुझे घर लौटना है, वापिस दिल्ली आना है और doctors मुझे जाने नहीं दे रहे थे। उस दिन मैं श्री महाराज जी से फिर लड़ी। मैंने उनसे कहा “आप आइए यहाँ देखिए कोई कुछ नहीं कर रहा, मुझे कोई indication दीजिए कि आप मेरी बात सुन रहे हैं।” कुछ देर बाद मुझे ऐसा लगा कि मेरे कमरे में एक अनजान Aunty आई हैं, मुझे पता चला कि वह specially मुझसे मिलने आई थीं। उनसे मिलकर ऐसा लगा कि श्री महाराज जी ही हैं, बहुत positive vibe आई। मानो श्री महाराज जी ने बखूबी अपना संकेत दे दिया। ये बात 6 अक्तूबर शुक्रवार की है तब तक न मैं अपने बल से बैठ पा रही थी और न ही खड़ी हो पा रही थी। इसके अगले दिन से ही मैं खड़ी भी होने लग गई और कुछ देर तक अपने बल से बैठने भी लग गई। श्री महाराज जी की कृपा से 11 अक्तूबर को मैं 8 घंटे में आराम से बिना किसी परेशानी के दिल्ली आ गई। श्री महाराज जी की कृपा का मैं क्या बखान करूँ, आज जो मेरा ये नया जीवन है वह उन्हीं की कृपा से है। ■

Power of Good Thoughts

Do you realise that our mind is constantly creating thoughts throughout the day.

For example, when your parents request you to tidy up your room, what thoughts might get created in your mind?

Thought 1: This is so boring, I don't want to do this.

Thought 2: Why me? Can they not do it themselves if my messy room bothers them?

Thought 3: Sure, this will just take me 5 minutes.

Thought 4: This is an easy way to help my parents, perhaps I can help them in other ways too.

Thought 5: (Write your thought in the space below, for this scenario)

These thoughts are super important because they finally guide our behaviour, words and actions.

The way we think influences how we behave, what we say and what we do.

Good thoughts are those which will allow you to be kind and generous towards everyone. If your thoughts are good, then all your words and actions will also be good. The more good thoughts you create, the more help you are able to provide to everyone around and the closer to Shree Ram you become.

In the above example, Thought 3 and 4 are good thoughts as it helps you stay calm, happy and kind.

So today, let us take 5 minutes to sit down and observe our thoughts. Find a

comfortable spot and sit in silence. Notice all the thoughts that come and go in your mind. Write or draw all the thoughts that come to you in the space provided below.



Now it is time to check your thoughts. Look at all the thoughts you have written or drawn and decide for yourself which thoughts according to you are good. Check if your thoughts would make you and everyone around you feel happy. Repeat this activity as often as possible. ■



**CONTACTING THE SHREE SWAMI
SATYANAND DHARMARTH TRUST DELHI
Jai Jai Ram!**

Organisers and Sadhaks in different Shree Ram Sharnam / Shree Amritvani Satsang centres can contact the Trust in Delhi regarding Satsang-related matters using the following

WhatsApp: **+91 98105 08480**

Kindly send WhatsApp or text messages only and please do not call.

Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust,
Shree Ram Sharnam, Delhi

**श्री स्वामी सत्यानंद धर्मार्थ ट्रस्ट से सम्पर्क
जय जय राम!**

विभिन्न श्रीरामशरणम्/श्री अमृतवाणी सत्संग केंद्रों के व्यवस्थापक एवं साधक सत्संग सम्बंधित किसी भी विषय पर दिल्ली ट्रस्ट से निम्नलिखित नम्बर पर सम्पर्क कर सकते हैं

WhatsApp: **+91 98105 08480**

कृपया कॉल न करें। केवल WhatsApp या text message ही भेजें।

श्री स्वामी सत्यानंद धर्मार्थ ट्रस्ट।
श्रीरामशरणम्, दिल्ली।

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम (सितम्बर से दिसम्बर 2023)

साधना सत्संग, खुले सत्संग एवं नाम दीक्षा का विवरण

- **पठानकोट**, पंजाब में 23 से 24 सितम्बर तक दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् 175 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हरिद्वार** में 30 सितम्बर से 3 अक्टूबर 2023 तक परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के अवतरण दिवस के उपलक्ष्य में तीन रात्री साधना सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 18 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **पतलीकुल**, नज़दीक मनाली, हिमाचल प्रदेश 5 अक्टूबर को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् 34 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **गुरदासपुर**, पंजाब में 6 से 8 अक्टूबर तक तीन दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् 223 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हरिद्वार** में 15 से 24 अक्टूबर तक नौ रात्री रामायणी सत्संग का आयोजन हुआ।
- **सुजानपुर**, पंजाब में 27 से 29 अक्टूबर तक तीन दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ

जिसके पश्चात् 159 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

- **जम्मू**, में 3 से 5 नवम्बर तक तीन दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् 213 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **फाज़लपुर**, कपूरथला, पंजाब में 17 से 20 नवम्बर तक तीन दिवसीय साधना सत्संग का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् 12 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **कटुआ**, जम्मू कश्मीर में 25 नवम्बर को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् 72 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **सांपला**, हरियाणा में 26 नवम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद 35 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **मैलबोर्न**, आस्ट्रेलिया में 1 से 3 दिसम्बर तक खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् 6 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **अमृतसर**, पंजाब में 3 दिसम्बर को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसके पश्चात् 31 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

- **ग्वालियर**, मध्यप्रदेश में 4 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद 52 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **भोपाल**, मध्यप्रदेश में 10 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद 98 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **सूरत**, गुजरात में 16 से 17 दिसम्बर तक दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन होगा जिसके पश्चात् 17 दिसम्बर को नाम दीक्षा होगी।
- **भिवानी**, हरियाणा में 23 से 24 दिसम्बर तक दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन होगा जिसके पश्चात् नाम दीक्षा होगी।
- **उज्जैन**, मध्यप्रदेश में 25 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन का कार्यक्रम होगा जिसके बाद नाम दीक्षा होगी।
- **श्रीरामशरणम् दिल्ली** में नव वर्ष के उपलक्ष्य में 31 दिसम्बर साप्ताहिक सत्संग के बाद श्री रामायण जी का अखण्ड पाठ का शुभारम्भ होगा जिस की पूर्ति 1 जनवरी 2024 को प्रातः 7 बजे होगी। तत्पश्चात् दैनिक सत्संग होगा।
- **श्रीरामशरणम् दिल्ली** में अक्तूबर, नवम्बर और दिसम्बर में कुल 92 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ली।

निर्माणाधीन श्रीरामशरणम् की प्रगति

- **नागौद**, मध्यप्रदेश में श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य प्रगति पर है। ■

Naam Deeksha in Other Centers (2024)

Place	Date	Day
Indore	07-Jan	Sunday
Bolasa	11-Jan	Thursday
Dahod	12-Jan	Friday
Kupda	13-Jan	Saturday
Jhabua	14-Jan	Sunday
Pune	20-Jan	Saturday
Banmore (M.P.)	22-Jan	Monday
Faridabad	26-Jan	Friday
Ropar (Pb.)	28-Jan	Sunday
Hansi	04-Feb	Sunday
Gurugram	07-Feb	Wednesday
Pilibanga	11-Feb	Sunday
Rohtak	18-Feb	Sunday
Sardarshahar	24-Feb	Saturday
Amarpattan (M.P.)	29 Feb	Thursday
Bilaspur	03-Mar	Sunday
Kapurthala	10-Mar	Sunday
Jabalpur	12-Mar	Tuesday
Ratangarh	16-Mar	Saturday
Hisar	31-Mar	Sunday
Bhareri	06-Apr	Saturday
Mandi	07-Apr	Sunday
Jawali	13-Apr	Saturday
Kandaghat	12-May	Sunday
Faridabad	25-May	Saturday
Chambi	26-May	Sunday
Jalandhar	02-Jun	Sunday
Chandigarh	09-Jun	Sunday
Manali	16-Jun	Sunday
Kishtwar	22-Jun	Saturday
Badherwah	23-Jun	Sunday
Hoshiarpur	08-Sep	Sunday
Gurdaspur	29-Sep	Sunday
Pathankot	27-Oct	Sunday
Jammu	10-Nov	Sunday
Kathua	17-Nov	Sunday
Sujanpur	24-Nov	Sunday
Kapurthala	01-Dec	Sunday
Alampur	03-Dec	Tuesday
Melbourne	08-Dec	Sunday
Devas (M.P.)	15-Dec	Sunday
Surat	22-Dec	Sunday
Bhiwani	29-Dec	Sunday

Calendar

Naam Deeksha In Shree Ram Sharnam Delhi (2024)			
January	21	Sunday	11:00 AM
March	24	Sunday	11:00 AM
April	14	Sunday	10.30 AM
May	19	Sunday	10.30 AM
July	21	Sunday	4.00 PM
August	18	Sunday	10.30 AM
September	22	Sunday	10.30 AM
October	13	Sunday	10.30 AM
November	3	Sunday	11:00 AM
December	8	Sunday	11:00 AM

Open Satsang (2024)		
Jhabua	14 to 16 January	Sunday to Tuesday
Pune	20 January	Saturday
Pilibanga	10 to 11 February	Saturday to Sunday
Sardarshahar	24 to 25 February	Saturday to Sunday
Bilaspur	1 to 3 March	Friday to Sunday
Kapurthala (Fazalpur)	9 to 10 March	Saturday to Sunday
Rattangarh	16 to 17 March	Saturday to Sunday
Delhi (Holi)	23 to 25 March	Saturday to Monday
Hisar	30 to 31 March	Saturday to Sunday
Bhareri	06 April	Saturday
Mandi	07 April	Sunday
Jhabua(Maun Sadhna)	8 to 17 April	Monday to Wednesday
Kandaghat	12 May	Sunday
Manali	14 to 16 June	Friday to Sunday
Delhi	27 to 29 July	Saturday to Monday
Rohtak	10 to 11 August	Saturday to Sunday
Hoshiarpur	08 September	Sunday
Rewari	14 to 15 September	Saturday to Sunday
Gurdaspur	27 to 29 September	Friday to Sunday
Pathankot	26 to 27 October	Saturday to Sunday
Jammu	8 to 10 November	Friday to Sunday
Kathua	17 November	Sunday
Sujanpur	22 to 24 November	Friday to Sunday
Alampur	3rd December	Tuesday
Melbourne (Australia)	6 to 8 December	Friday to Sunday
Surat	21 to 22 December	Saturday to Sunday
Bhiwani	28 to 29 December	Saturday to Sunday

Sadhna Satsang (2024)		
Indore	5 to 8 January	Friday to Monday
Hansi	2 to 5 February	Friday to Monday
Haridwar	13 to 16 March	Wednesday to Saturday
Haridwar	19 to 24 April	Friday to Wednesday
Haridwar (Only Jhabua)	27 to 30 April	Saturday to Tuesday
Haridwar (Only Jhabua)	2 to 5 May	Thursday to Sunday
Haridwar	30 June to 3rd July	Sunday to Wednesday
Haridwar	16 to 21 July	Tuesday to Sunday
Haridwar	30 September to 3 October	Monday to Thursday
Haridwar (Ramayani)	3 to 12 October	Thursday to Saturday
Haridwar	11 to 14 November	Monday to Thursday
Kapurthala	29 November to 2 December	Friday to Monday

Poornima (2024)		
January	25	Thursday
February	24	Saturday
March	25	Monday
April	23	Tuesday
May	23	Thursday
June	22	Saturday
July	21	Sunday
August	19	Monday
September	18	Wednesday
October	17	Thursday
November	15	Friday
December	15	Sunday



यदि आप 'सत्य साहित्य' की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर-IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित
एवं रेव स्कैनस प्राइवेट लिमिटेड, 216, सेक्टर-4, आई.एम.टी. मानेसर, गुरुग्राम, हरियाणा-122051 से मुद्रित। संपादक: मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

Publisher and printer Shri Anil Dewan for Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, 8-A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024 and
printed at Rave Scans Private Limited, 216, Sector-4, IMT Manesar, Gurugram, Haryana-122051. Editors: Medha Malik Kudaisya and Malvika Rai.

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली

E-mail of Satya Sahitya: srs.satyasahitya@gmail.com

E-mail of Shree Ramsharnam: shreeramsharnam@hotmail.com

वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org